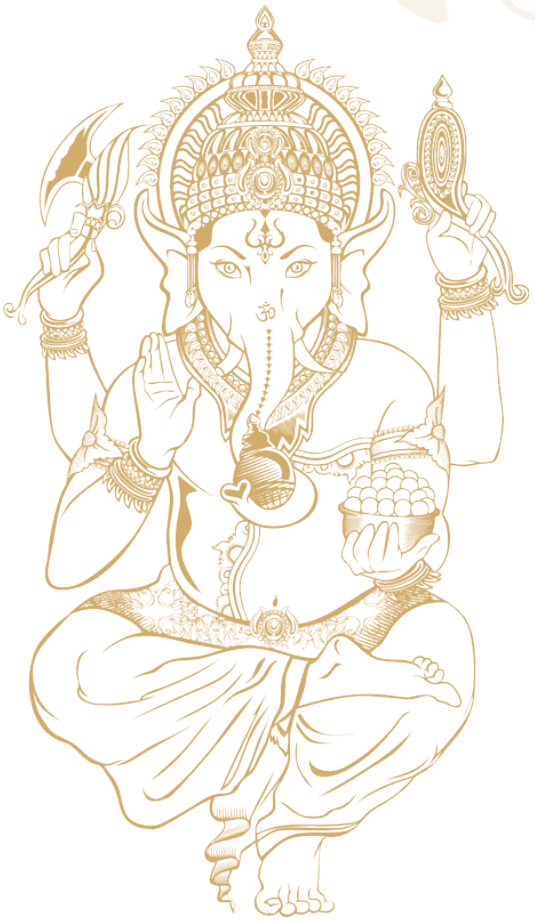

A

18 Feb 2026

04:26 PM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121339101**

तिथि 18/02/2026 **समय** 16:26:00 **वार** बुधवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:27
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	02:00:29 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:13:56 घं	योनि	अश्व
सूर्योदय	06:56:13 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:10:26 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मेष
मास	फाल्गुन	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	वायु
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	सू-सूरज
नक्षत्र	शतभिषा	पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
योग	शिव	होरा	शनि
करण	बव	चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी		योगिनी	
राहु 3वर्ष 7मा 24दि		धान्या 0वर्ष 7मा 9दि	
राहु		धान्या	
18/02/2026		18/02/2026	
14/10/2029		28/09/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	18/02/2026		18/02/2026
शुक्र	03/05/2026	संकटा	29/06/2026
सूर्य	28/03/2027	मंगला	30/07/2026
चन्द्र	25/09/2028	पिंगला	28/09/2026
मंगल	14/10/2029		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:09:39	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	---	0:00			
सूर्य			05:34:07	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	शत्रु राशि	1.46	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			17:17:42	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	सम राशि	1.12	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	26:12:46	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	गुरु	उच्च राशि	1.44	आत्मा	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			23:34:34	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	सम राशि	1.00	अमात्य	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		21:33:29	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.14	भ्रातृ	धन	सम्पत
शुक्र			15:49:24	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	0.93	पुत्र	कलत्र	जन्म
शनि			06:16:21	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.62	ज्ञाति	आयु	विपत
राहु			14:42:57	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			14:42:57	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

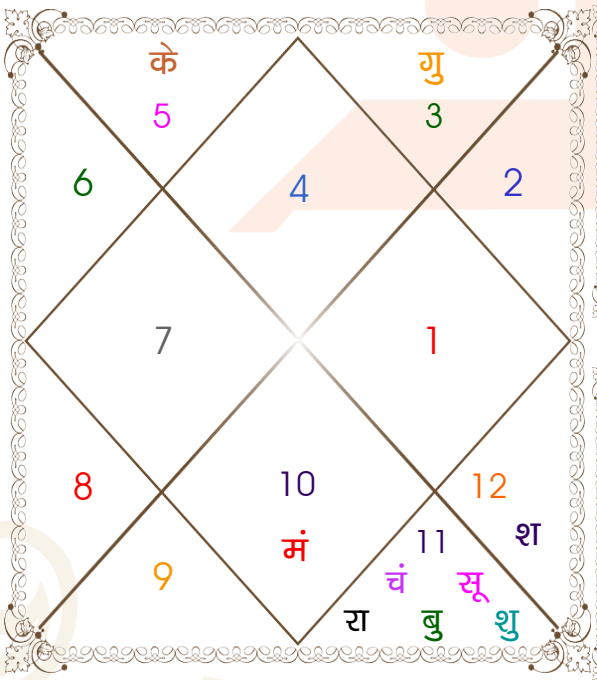

चन्द्र कुंडली

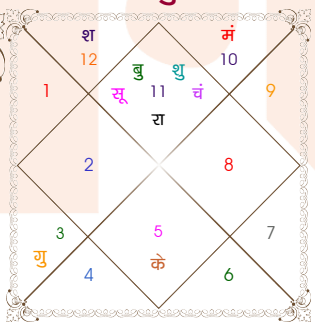

नवमांश कुंडली

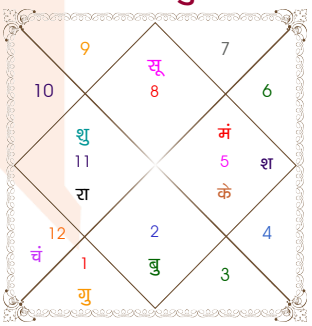

सर्वाष्टकवर्ग

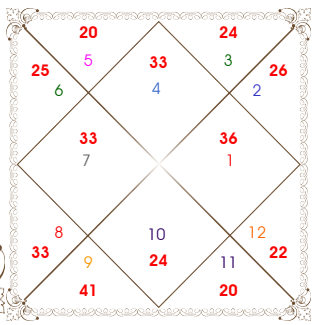

दशमांश कुंडली

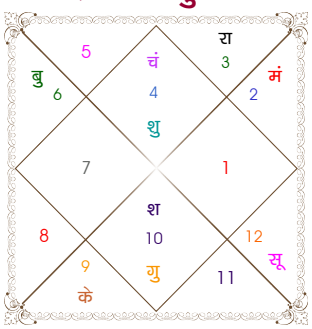

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, नाड़ी आद्य, योनि अश्व तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सु" या "सू" अक्षर से होगा यथा- सुरेश, सुदामा आदि।

आप शीत से अत्यन्त ही व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा इसे सहन करने में प्रायः अपने को असमर्थ समझेंगे। आप अत्यन्त ही साहसी पुरूष होंगे एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपके मन में दयाभाव की अपेक्षा कठोरता की प्रबलता रहेगी एवं यदा कदा इसका आप अपने स्वभाव में अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते यरहेंगे। आप में चतुराई का गुण भी विद्यमान रहेगा एवं अपने अधिकांश कार्यों को अपनी चालाकी तथा चतुराई से ही सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित आदर तथा सम्मान को प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शत्रुवर्ग को परास्त करने में आप नित्य सफलता प्राप्त करेंगे तथा शत्रु वर्ग आपसे भयभीत एवं प्रभावित रहेगा।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

आपकी ज्योतिष शास्त्र में प्रारम्भ से ही रूचि एवं श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इसका विस्तृत ज्ञान भी अर्जित करेंगे। आपके स्वभाव में सुशीलता रहेगी एवं शान्त प्रवृति से भी आप सुशोभित रहेंगे। साथ ही उग्र एवं हिंसक भावों का आपमें अभाव रहेगा। आपको अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा तथा इस प्रवृति का आप नित्य पालन तथा प्रदर्शन करते रहेंगे।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा विपुल सम्पत्ति से युक्त रहकर समाज में यश प्राप्त करेंगे। लेकिन आपकी प्रवृति कंजूसी से भी युक्त रहेगी अतः आप व्यय करने में अत्यन्त ही सतर्क रहेंगे एवं धन संचय के प्रति ही अधिक रूचिशील रहेंगे। स्त्रियों के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनसे आपके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित रहेंगे। आपका अधिकांश समय घर से बाहर परदेश या विदेश में ही व्यतीत होगा एवं विदेश यात्राएं आप प्रायः करते

रहेंगे।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आपकी प्रवृति स्पष्ट रूप से सम्मुख कहने की रहेगी एवं जो कुछ भी आप कहना चाहते हैं साफ शब्दों में कह देंगे। इससे कई लोग आपसे प्रभावित होंगे तो कई असंतुष्ट भी रहेंगे। आप में कई प्रकार के व्यसन भी रहेंगे तथा उनका उपभोग आप जीवन में करते रहेंगे। आप में दुराग्रह की भावना की भी प्रधानता रहेगी तथा अपनी ही बात को नित्य सत्य एवं प्रभावित करने के लिए तत्पर एवं स्वतंत्र होंगे इससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक ऊंची रहेगी तथा मुख एवं मस्तक में भी विस्तृतता रहेगी। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कमर भी स्थूलता से युक्त रहेंगे। आपके शरीर में कोमलता की अल्पता रहेगी तथापि इसमें सुन्दरता एवं आकर्षण पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति विद्रोही भी रहेगी तथा समय समय पर आप इस भाव का प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप में आलसपन तथा क्रोध की भी अधिकता रहेगी। साथ ही धर्म में भी आपकी आस्था रहेगी। चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि तथा लगन रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुलता की अनुभूति करेंगी।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक भी विस्तृत आकार का रहेगा। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कटिभाग भी स्थूल रहेंगे। आप में लावण्यता का अभाव रहेगा परन्तु इससे आपके सौन्दर्य तथा आकर्षण पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके व्यापारिक या सामाजिक संबंध विस्तृत रहेंगे। आप में विद्रोह की भावना भी प्रबल रूप से विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अन्य जनों से इस भावना का प्रदर्शन करेंगे। आपकी धर्म के प्रति निष्ठा का भाव रहेगा इसके साथ ही आप स्वभाविक रूप से उग्रता से भी युक्त रहेंगे अतः कभी कभी क्रोधाधिक्य भी आपमें रहेगा। लेकिन शिल्प विद्या या चित्रकारी में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में विशेष सफलता तथा यश प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में कई बार आप मानसिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आप समाज में एक विद्वान तथा प्रतिष्ठित पुरूष रहेंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको ज्ञान रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप निपुण रहेंगे। आप शान्ति पूर्वक प्रत्येक कार्य का समाधान करना पसन्द करेंगे। उग्रता या आवेश की भावना से आप कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। आपके दुश्मन आपसे सदैव भयभीत एवं पराजित रहेंगे। अतः इनका आपके ऊपर कोई प्रभाव नही रहेगा।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

कूर कर्मों को आप गुप्त रूप से सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे या अप्रत्यक्ष रूप से इनमें आपका सहयोग रहेगा। आप भ्रमण तथा यात्रादि करने में भी रूचिशील रहेंगे एवं आपका अधिकांश समय घूमने फिरने या यात्रा आदि में ही व्यतीत होगा। अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की प्रवृति आप में रहेगी तथा इसके लिए आप आजीवन यत्नशील भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में भी विभिन्नता रहेगी एवं नित्य उतार चढाव आते रहेगे। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा सुगन्धित पुष्पों में भी आसक्ति होगी एवं समयानुसार आप इसका उपभोग भी करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में भी आप की ख्याति रहेगी लेकिन श्रेष्ठ

विद्वानों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इससे आपकी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप अपने दैनिक तथा सांसारिक कार्यों में सामान्यतया सफलता ही अर्जित करेंगे एवं समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में भी आप समर्थवान होंगे। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपका अनुकरण करने के लिए भी रूचिशील होंगे। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ जनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं इनकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। महिला वर्ग में भी आप प्रिय रहेंगे तथा समयानुसार उनकी सेवा आदि करने में भी पीछे नहीं हटेंगे। जाति या वर्ग के लोगों की भलाई के कार्यों में आप हमेशा लगनशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसमें सफलता अर्जित करेंगे इससे बन्धु वर्ग के मध्य आप लोकप्रिय एवं सम्मानित रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के सद्गुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में इनका पालन करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई भी सामान्य से ऊंची रहेगी तथा नसे भी शरीर पर स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी। समाज में अन्य महिलाओं से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान एवं सहयोग को प्राप्त करेंगे। साथ ही मित्रवर्ग आपको पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही दान देने की प्रवृति विद्यमान रहेगी अतः आप अपने जीवन में यत्नपूर्वक यथाशक्ति अवसरानुकूल इस प्रवृति का पालन करेंगे एवं जरूरतमन्द लोगों को कृतार्थ करेंगे। आप में कृतज्ञता का सद्गुण भी रहेगा तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित एवं प्रसन्न रहेंगे। आप जीवन में विविध प्रकार के वाहन-साधनों से सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें सुन्दरता से युक्त

रहेंगी एवं बुद्धि में भी धोखा या प्रपंचादि करने का अभाव रहेगा एवं सरल मति से सबके साथ परस्पर समान व्यवहार रखेंगे। इस प्रकार अपने स्नेह शील स्वभाव तथा सत्कार्यों के द्वारा आप समाज में यथोचित आदर एवं लोकप्रियता अर्जित करेंगे। आप स्वयं अपने बुद्धि बल से धनार्जन करेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली होगी। साथ ही आपके मन में दया की अपेक्षा कठोरता के भाव की प्रधानता रहेगी। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस से सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। आप में उग्रता का भी भाव रहेगा तथा अकारण ही आप उत्तेजित भी हो जाया करेंगी। इसके साथ ही अन्य जनों से परस्पर विवाद भी आप करते रहेंगे एवं शारीरिक बल से सर्वदा परिपूर्ण रहेंगे।

आपको जीवन में यदा कदा उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की अनुभूति हो सकती हैं। साथ ही आपका शारीरिक स्वरूप में आकर्षण विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिसके कारण श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कार आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को स्वच्छन्दतापूर्वक सम्पन्न करना पसन्द करेंगे। अनावश्यक बाह्य हस्तक्षेप तथा दवाब आपको उचित नहीं लगेगा। आप अधिकांश रूप से सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे एवं शौर्य गुणों की भी आप में प्रधानता रहेगी एवं साहस पूर्वक तथा निर्भयता से आप अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप एक तेजस्वी पुरूष भी होंगे तथा अन्य लोग भी आपकी तेजस्विता से प्रभावित रहेंगे। इससे आपको पूर्ण रूप से समाज में आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। वीणा या अन्य संगीत वाद्य यंत्रों में आप की रूचि रहेगी तथा इसमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक विश्वास पात्र व्यक्ति रहेंगे एवं स्वकार्य क्षेत्र में अत्यन्त ही विश्वसनीय एवं आदरणीय समझे जाएंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, गण्डयोग तथा वणिजकरण मे कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक अव्यवस्थता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हों रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए एवं नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। साथ ही समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।